## आदिकाल की प्रवृत्तियाँ

डॉ.सुनील बहल

आदिकाल की रचनाओं के आधार पर इस युग के साहित्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं-

1. ऐतिहासिक काव्यों की प्रधानता : आदिकाल में ऐतिहासिक व्यक्तियों के आधार पर चरित काव्य लिखे जाते थे । जैसे - 'पृथ्वीराज रासो', 'परमाल रासो', 'कीर्तिलता' आदि । यह भी सत्य है कि इस चरित साहित्य में प्राय: प्रामाणिकता का अभाव देखने को मिलता है। इनमें वर्णित घटनाएं वास्तविकता से मेल नहीं खातीं ।पर इस बात को भी समझना चाहिए कि ये चरित काव्य ऐतिहासिक न होकर साहित्यिक हैं और काव्य सुन्दरता की दृष्टि से इनका आनंद लेना चाहिए।
2. आश्रयदाताओं का गुणगान करना : इस काल के अधिकांश कवियों ने अपने आश्रयदाताओं की प्रशंसा का बढ़ा-चढ़ा कर बखान किया है। अपने आश्रयदाताओं वीर-गाथाओं का अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन करने में ऐतिहासिकता की उपेक्षा की गई और कल्पना को बढ़ावा मिला। वे अपने राजा की वीरता गाकर भी व्यक्त करते थे। राजा अपनी वीरता को सुनकर फूला न समाता था और कवि उनसे इनाम प्राप्त करते थे ओंर नाम कमाते थे।
3. युद्धों का सजीव चित्रण : आदिकालीन साहित्य में युद्धों का सजीव चित्रण हुआ है। युद्धों का प्रमुख कारण स्त्रियाँ थी । उस समय युद्धों के द्वारा ही अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया जाता था । चूंकि कवि भी अपनी सेना का मनोबल बढ़ाने के लिए युद्ध में साथ जाते थे, अत: उनकी रचनाओं में युद्धों के सजीव दर्शन

होते हैं, जो कि अतुलनीय हैं । चंदबरदाई के बारे में तो यह प्रचलित है कि वे लेखनी एवं तलवार दोनों के धनी थे।

4. लौकिक साहित्य की रचनाएँ : **आदिकाल में कुछ कवियों ने प्रेम व शृंगार से सम्बन्धित लौकिक साहित्य की भी रचना की। ढोला मारू रा दूहा,वसंत विलास, अमीर खुसरो की जन जीवन से सम्बन्धित पहेलियाँ व मुकरियाँ लिखीं जो कि बहुत प्रसिद्ध रही हैं ।**
5. धार्मिक साहित्य : इस काल में धार्मिक रचनाओं में लोगों को धर्म के मार्ग पर ले जाने के मंतव्य से उच्चकोटि के साहित्य देखने को मिलता है। जैसे - परमात्म प्रकाश, पउम चरिउ आदि । इस काल में बौद्ध, जैन, सिद्ध और नाथ साहित्य में उपदेशात्मकता की प्रवृत्ति भी देखने को मिलती है ।
6. **राष्ट्रीय भावना के चित्रण का अभाव :** इस काल में राष्ट्रीय भावना के चित्रण का अभाव रहा। कवि अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा करने , उनके युद्धों की वीरता का गुणगान करने आदि में ही लगे रहते थे, इसलिए आम लोगों की समस्याओं और उनके समाधान के प्रति उनका ध्यान ही नहीं गया। अत: इस काल के साहित्य में राष्ट्रीयता का अभाव देखने को मिलता है ।
7. विविध रचनाएँ : अमीर खुसरो की पहेलियाँ, मुकरी और दो सखुन जैसी विविध रचनाएँ भी इस काल में रची जा रही थीं।
8. भाषा :- राजस्थानी मिश्रित अपभ्रंश (डिंगल) : इस काल की रचनाओं में डिंगल-पिंगल भाषा का प्रयोग हुआ है। वीरगाथात्मक रासक ग्रंथों में डिंगल भाषा का स्वरूप देखने को मिलता है किंतु इनमे पिंगल का भी मिश्रण है । मैथिली मिश्रित अपभ्रंश : विद्यापति की पदावली और कीर्तिलता में इस भाषा का स्वरूप देखने को मिलता है।

खड़ी बोली मिश्रित देशभाषा : इसका सुंदर प्रयोग अमीर खुसरो की पहेलियों एवं मुकरियों में देखने को मिलता है ।

9. अलंकार व छंद का प्रयोग : इस काल के भिन्न-भिन्न कवियों की रचनाओं में प्राय: सभी अलंकारों का समावेश मिलता है । पर प्रमुख रूप से उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा ,अतिश्योक्ति अलंकारों का प्रयोग हुआ । दोहा, तोमर, तोटक, गाथा, रोमा-छप्पय आदि छंदों का प्रयोग हुआ है ।

10 रस : इस युग में मुख्य रूप से तीन रसों का अधिकतर प्रयोग हुआ है । इस काल के चारण काव्य में वीर रस का प्रयोग किया गया है । क्योंकि कवि द्वारा अपने राजा की वीरता की कविताएँ लिखी गयीं। अत: वीर रस की प्रधानता के कारण ही इसे वीरगाथा या वीरकाल भी कहा जाता है । चारण काव्य तथा विद्यापति की 'पदावली' और 'कीर्तिलता' में श्रृंगार रस का प्रयोग हुआ है । विवाह एवं प्रेम प्रसंगों तथा धार्मिक साहित्य में शांत रस का प्रयोग देखने को मिलता है ।.

==========================================

**तैयारकर्ता व प्रस्तुतकर्ता**

**डॉ.सुनील बहल**

**एम.ए.(संस्कृत ,हिंदी), एम.एड.,पीएच.डी (हिंदी)**

**स्टेट रिसोर्स पर्सन**

**(हिंदी और पंजाबी)**

==========================================